विषय – राजनीति विज्ञान

पेपर का नाम – भारत में राष्ट्रवाद

अध्याय – क्रांग्रेस समाजवादी दल

पाठ्यक्रम निर्मात्री – डॉ० नमिता कुमारी

विश्वविद्यालय - हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

क्रांग्रेस समाजवादी दल

विषय सूची:

1. **परिचय**
2. **क्रांग्रेस समाजवादी दल की उत्पत्ति**
3. **कांग्रेस समाजवादी दल की विचारधारा, रणनीति और कार्यक्रम**
4. **भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में कांग्रेस समाजवादी दल की भूमिका**
5. **सीएसपी एवं कांग्रेस पार्टी**
6. **उपसंहार**

परिचय

समाजवाद शब्द अंग्रेजी भाषा के 'Socialist' शब्द का हिंदी रूपान्तरण है। अंग्रेजी भाषा के इस शब्द की जड़ लैटिन शब्द 'Sociare' में है, जिसका अर्थ है गठबंधन करना, सांझा करना। आधुनिक राजनीतिक दर्शन में समाजवाद शब्द एक विचारधारा के लिए उपयोग किया जाता है और समाजवादी उन व्यक्तियों या व्यवस्थाओं को कहा जाता है, जो इस विचारधारा को मानते हैं, पालन करते हैं, व्यवहार में लाते हैं या प्रचार करते हैं। समाजवादी दल, समाजवादी व्यक्तियों का एक समूह है जो कुछ राजनीतिक लक्ष्यों को पाना चाहते हैं। राजनीतिक प्रक्रिया में समाजवाद शब्द का उपयोग इतना व्यापक है कि इसके अर्थ को समझना कठिन है। रूस में 1917 में आयी क्रांति को समाजवादी क्रांति कहा जाता है, वहीं पश्चिमी यूरोप के देशों में बहुत सारे शांतिप्रिय एवं लोकतांत्रिक समाजवादी दल हैं। एक प्रसिद्ध राजनीति शास्त्री सी.एम.जोड का कहना है- "समाजवाद उस टोपी की तरह है जिसने अपना आकार खो दिया है, क्योंकि उसे बहुत सारे लोग पहनते हैं। समाजवाद उस गिरगिट की तरह है जो वातावरण के अनुसार अपना रंग बदलता है" ।

समाजवाद की बहुत सारी परिभाषाएँ दी गई हैं। जी.डी.एच. कोल का कहना है- "समाजवाद का अर्थ चार जुड़े हुए चीजों से लगाया जा सकता है- एक मानवीय सहयोग जो वर्ग विभेद में विश्वास नहीं रखता, एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था जिसमे कोई भी इतना धनी या गरीब नहीं है कि वह अपने पड़ोसियों से समानता के साथ मेल-जोल करने में असमर्थ हो, उत्पादन के सभी महत्वपूर्ण उपकरणों का आम स्वामित्व एवं उपयोग, और आम भलाई को बढ़ावा देने में अपनी क्षमता के अनुसार एक-दूसरे की सहायता करने का सभी नागरिकों का दायित्व" । हम समझ के उद्देश्य के लिए समाजवाद के कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं की पहचान कर सकते हैं- (1)समाजवाद मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी के रूप में देखता है जो कि समुदाय में सामूहिक कार्य एवं भाईचारे की भावना से रहना चाहते हैं। (2) समाजवादियों के अनुसार मनुष्य मूल रूप से सहयोग की ओर उन्मुख होता है न कि प्रतिस्पर्धा की ओर (3) एंड्रय हेवूड के अनुआर , समानता के प्रति प्रतिबद्धता समाजवादी विचारधारा की सबसे प्रमुख विशेषता है। हेवूड का कहना है कि समाजवादी समानता के पक्ष में तर्क देते हैं क्योंकि सामाजिक समानता सामुदायिक सहयोग को

बढ़ावा देता है। इसलिए समाजवाद का मौलिक दर्शन समतावाद है। (4) उत्पादन के साधनों का सामाजिक या सामूहिक स्वामित्व। इसलिए समाजवादी दर्शन में निजी सम्पत्ति के लिए कोई स्थान नहीं है। (5) वर्ग-राजनीति का विचार, समाजवाद की एक और महत्वपूर्ण विशेषता है। वे वर्ग के आधार पर सामाजिक विभाजन को समाज में सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक विभाजन मानते हैं।वे वर्ग शोषण को समाप्त कर एक वर्गहीन समाज की स्थापना करना चाहते हैं। (6) समाजवादी अर्थव्यवस्था, केंद्रीकृत आर्थिक नियोजन के विचार पर आधारित है।

फेबियनिजम या फेबियन समाजवाद का उदय ब्रिटेन में हुआ। यह विचारधारा फेबियन सोसाइटी नाम के संस्था से उभरा । फेबियन सोसाइटी का गठन लंदन में 1883-1884 में किया गया था। इस सोसाइटी का लक्ष्य ब्रिटेन में एक लोकतांत्रिक समाजवादी राज्य की स्थापना करना था। फेबियन, समाजवादी सिद्धांतों एवं लक्ष्यों में भरोसा रखते थे। परंतु उनके विचार मार्क्स के वैज्ञानिक समाजवाद के विचार से भिन्न थे । जहाँ एक ओर मार्क्स क्रांति की बात करते थे, वहीं दूसरी ओर फेबियंस लोकतंत्र, सुधार एवं संयम की बात करते थे। फेबियनिजम के संस्थापकों में मुख्य नाम है- थॉमस डेविडसन, जार्ज बर्नॉर्ड शॉ, सिडनी वेब, बीएटीस वेब, एडवर्ड पीज एवं ग्राहम व वलास। सन् 1889 में शॉ द्वारा सम्पादित समाजवाद पर लेख में फेबियन समाजवाद के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया गया। फेबियन सोसाइटी के प्रमुख कार्य्रक्रम थे :- लोगों को समाजवाद के बारे में शिक्षित करना, चर्चा समूह एवं व्याख्यान का आयोजन करना,सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याओं पर अनुसंधान करना एवं पत्र-पत्रिकाओं, किताबों का प्रकाशन करना। बाद में चल कर आर एच टॉनी, जी डी एच कोल और हेरोएड लास्की आदि विद्वान भी फेबियन सोसाइटी को शामिल हुए । फेबियन समाज ने तीसरी दुनिया के नेताओं को भी प्रभावित किया।

समाजवादी दर्शन के विकास में कार्ल मार्क्स का आगमन सबसे महत्वपूर्ण घटना है।कार्ल मार्क्स ने वैज्ञानिक समाजवाद का विचार प्रतिपादित किया एवं यह कहा कि उसके पहले आये समाजवादी, स्वपनदर्शी समाजवादी थे। कार्ल मार्क्स का मानना था कि मौजूदा शोषक पूँजीवादी व्यवस्था केवल एक समाजवादी क्रांति द्वारा ही हटाई जा सकती है। मार्क्स के बाद समाजवादी

विचारधारा के कई धाराओं का आगमन हुआ, जैसे - फेबियन समाजवाद, लोकतांत्रिक समाजवाद। ये धारायें हिंसक समाजवादी क्रान्ति के विचार को अस्वीकार करती हैं, और लोकतांत्रिक तरीकों से समाजवाद की दिशा में धीरे-धीरे प्रगति में विश्वास रखती है।

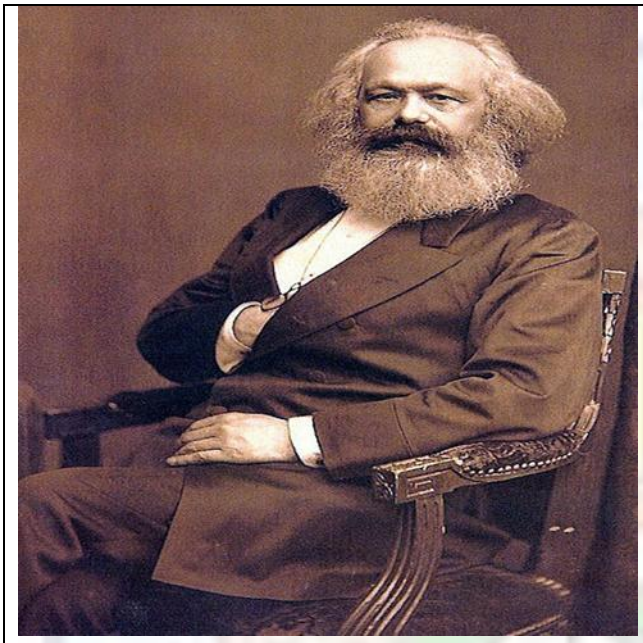

मार्क्सवाद, कार्ल मार्क्स एवं फेडरिक ऐंगल्स के विचारों पर आधारित था। मार्क्स (5 मई 1818-14 मार्च 1883) एक जर्मन दार्शनिक, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, इतिहासकार, पत्रकार और क्रांतिकारी समाजवादी थे। मार्क्स, आधुनिक समय के सबसे प्रभावशाली हस्तियों में शामिल हैं।वह समाजवाद के एक प्रणेता थे एवं उन्होंने वैज्ञानिक समाजवाद का प्रतिपादन किया। मार्क्स ने कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो में पूंजीवाद की समस्या एवं वर्ग-संघर्ष की समस्या पर विचार किया।मार्क्सवादी दर्शन के अनुसार समाज में मौलिक विभाजन वर्ग-विभाजन है। समाज में वर्ग-विभाजन, निजी सम्पत्ति की संस्था का परिणाम है। मार्क्स के अनुसार मानव सभ्यता में हमेशा ही दो वर्ग रहे हैं - एक उत्पादन के साधन के मालिक (अमीर) और दूसरे श्रमिक (वंचित) वर्ग। उत्पादन के साधन के मालिक अन्य वर्गों का शोषण करते हैं। आधुनिक समय में उत्पादन के साधन के मालिकों को पूँजीपति कहा जाता है। मार्क्सवादी शब्दावली में आधुनिक पूँजीवादी व्यवस्था के दो वर्गों को बुर्जुआ और सर्वहारा कहा जाता है। बुर्जुआ, सर्वहारा द्वारा पैदा किए गए धन को खुद हड़प लेता है। इस प्रकार पूँजीपति वर्ग,सर्वहारा वर्ग का शोषण करता है। और पूँजीपति वर्ग अपने वर्चस्व को कायम रखने के लिए, सामाजिक , राजनीतिक, नैतिक एवं कानूनी संस्थाओं का निर्माण करता है।मार्क्स के अनुसार आधुनिक पूँजीवादी व्यवस्था को सिर्फ क्रांति से ही समाप्त किया जा सकता है।

इस प्रकार के समाजवादी मानते हैं कि पूँजीवादी व्यवस्था को ज्यादा मानवीय बनाया जा सकता है। और इसके लिए आवश्यक है कि सामाजिक असमानता को कम किया जाए और गरीबी के उन्मूलन के लिए कदम उठाए जाए। आमतौर पर क्रांतिकारी मार्क्सवादी विचारधारा पर आधारित दलों को कम्युनिस्ट दल कहते हैं। और बाकी अन्य भिन्न प्रकार के समाजवादी विचारधारा वाले दलों को समाजवादी दल कहा जाता है। समकालीन समय में साम्यवादी शासन के पतन के बावजूद, विश्व के कोने-कोने में समाजवादी दलों का अस्तित्व है।

क्रांग्रेस समाजवादी दल की उत्पत्ति

रूस में बाल्वेशिक क्रांति ने दुनिया में पहली बार समाजवादी शासन की स्थापना की। रूसी क्रांति शक्तिशाली के विरुद्ध कमजोर की एकता एवं जीत का प्रतीक बन गया। रूस में बोल्शेविक दल की जीत ने विशेषकर तीसरी दुनिया के देशों में एक नवीन ऊर्जा का संचार किया। बोल्शेविक दल की लड़ाई एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था बनाने के लिए थी जिसमें व्यक्ति का व्यक्ति द्वारा शोषण नहीं होगा। बहुत सारे भारतीय राष्ट्रवादी नेता भी इन समाजवादी आदर्शों की ओर आकर्षित हुए।इसी समय भारत में गांधी का आविर्भाव हुआ।गांधी जी ने 1920-22 तक असहयोग आंदोलन चलाया। परंतु फरवरी 1922 में चौरी-चौरा की घटना के बाद गांधी ने यह आंदोलन वापस ले लिया। गांधी जी के इस रणनीतिक निर्णय से बहुत सारे भारतीय राष्ट्रीय नेता एवं युवा सहमत नहीं थे। इस पृष्ठभूमि ने भारत में समाजवादी विचारधारा के फैलने में महत्वपूर्ण योगदान किया।

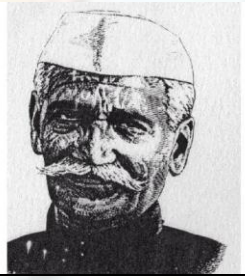

आचार्य नरेंद्र देव (1889-1956) कांग्रेस समाजवादी दल के प्रमुख नेताओं में एक थे। वह एक प्रमुख शिक्षाविद, विचारक एवं राष्ट्रवादी थे। वे लोकतांत्रिक समाजवाद के प्रबल समर्थक थे। और गांधीवादी सत्याग्रह के रणनीति में भी विश्वास रखते थे। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ब्रिटिश सरकार ने उन्हे कई बार जेल में डाला। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वे समाजवादी पार्टी तथा प्रजा समाजवादी पार्टी से जुड़े रहे। नरेंद्र देव मार्क्सवाद एवं बौद्ध दर्शन के जाने-माने विद्वान थे। वे

हिंदी भाषा के उपयोग के समर्थक थे। वे लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे।

(Source : http://wikieducator.org/User:Neeti_m/Article_on_Acharya_Narendra_Dev)

कुछ भारतीय, अंतरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन में सक्रिय हो गए और फिर भारत में सन् 1925 'कम्युनिस्ट पार्टी' की भी स्थापना की गई। हालांकि कुछ ऐसे नेता थे, जो कि मार्क्सवाद एवं समाजवाद से तो प्रभावित थे, परंतु वे हिंसक क्रांति के पक्ष में नहीं थे, और न ही वे अंतरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन का पिछलग्गू बनना चाहते थे। ऐसे बहुत सारे नेता, कांग्रेस में रहकर ही समाजवादी विचारधारा को फैलाना चाहते थे। बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक के अंत तक भारत के भिन्न क्षेत्रों में किसानों के मुद्दों को लेकर बहुत सारे नेता काम कर रहे थे। इस प्रकार से भारतीय समाज की अंदरूनी समस्याएँ भी उजागर हो रही थी। सविनय अवज्ञा आंदोलन के बाद कुछ ऐसे समाजवादी सोच के नेता नासिक जेल में बन्द थे। नासिक जेल में जयप्रकाश नारायण, अच्युत पटवर्धन, मीनू मसानी, अशोक मेहता आदि नेताओं ने एक ऐसे फोरम या पार्टी की कल्पना पर विचार किया जो समाजवादी विचारधारा पर आधारित थे। अप्रैल 1934 तक ये सभी नेता जेल से आजाद हो गए। मई 1934 में जय प्रकाश नारायण ने पटना में कुछ समाजवादी नेताओं की एक बैठक बुलाई। इसी बैठक से बिहार कांग्रेस समाजवादी दल का जन्म हुआ।आचार्य नरेंद्र देव इस पार्टी के अध्यक्ष बने एवं जय प्रकाश नारायण महासचिव चुने गए।पटना सम्मेलन के बाद समाजवादी नेताओं ने देश के भिन्न क्षेत्रों के समाजवादियों से सम्पर्क करने का प्रयास किया। अंतत: अक्टूबर 1934 में मुम्बई में समाजवादियों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें क्रांग्रेस समाजवादी दल का जन्म हुआ। जय प्रकाश नारायण को इस दल का महासचिव चुना गया एवं मसानी को संयुक्त सचिव बनाया गया। शुरू से ही कांग्रेस समाजवादी चार मूलभूत मान्यताओं पर सहमत हुए (चंद्रा,299): - (1) भारत में स्वतंत्रता के लिए संघर्ष सबसे महत्वपूर्ण संघर्ष है। (2) राष्ट्रवाद, समाजवाद के लिए आवश्यक है, कांग्रेस ही राष्ट्रीय आन्दोलन का सबसे प्रमुख दल है।(3) समाजवादियों के लिए यह आवश्यक

है कि वे कांग्रेस के अंदर रह कर कार्य करे क्योंकि कांग्रेस ही राष्ट्रीय आंदोलन का सबसे प्रमुख दल है।(4) अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समाजवादियों को चाहिए कि वे मजदूरों और किसानों को संगठित करें। तथा इन लोगों के आर्थिक मांगों को लेकर संघर्ष किया जाए।

क्रांग्रेस समाजवादी दल

राममनोहर लोहिया (23 मार्च 1910-12 अक्तूबर 1967) का जन्म अकबर पुर, फैजावाद उत्तर प्रदेश में हुआ था। लोहिया एक दार्शनिक, विचारक, समाजवादी क्रांतिकारी एवं महान राष्ट्रवादी नेता थे। लोहिया ने 1932 में बर्लिन से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। भारत लौटने के बाद लोहिया ने कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण किया।परंतु अपने समाजवादी विचारों के कारण,लोहिया ने कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जब भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान सभी बड़े नेता चले गए तब लोहिया ने अपने समाजवादी साथियों के साथ भूमिगत आन्दोलन को चलाया।डॉ. लोहिया ने नागरिक स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी एवं गोवा के मुक्ति संग्राम में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने मार्च 1948 में कांग्रेस पार्टी को छोड़ दिया एवं तब कांग्रेस समाजवादी दल का नाम बदलकर समाजवादी दल कर दिया गया। सन् 1962 के लोकसभा चुनावों में लोहिया ने पंडित नेहरू के विरोध में चुनाव लड़ा। डॉ. लोहिया को भारत के कुछ मूल विचारकों में गिना जाता है। लोहिया यूरोप से निकले हुए दोनों विचार मार्क्सवाद एवं पूँजीवाद; के पक्ष में नहीं थे। उनका मानना था कि भारत की समस्याओं को सुलझाने के लिए लोकतांत्रिक समाजवाद को अपनाया जाना चाहिए। उन्होंने हमेशा ही भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व पर बल दिया। लोहिया गांधी के मतों एवं रणनीति के भी समर्थक नहीं थे। आजादी के बाद वे नेहरू-गांधी वंशवाद के विरोध में बढ़-चढ़ कर बोलते रहे।लोहिया का मानना था कि भारत में योजना, विकेंद्रीकरण के सिद्धांत पर आधारित है।वे चौखम्भा राज की बात करते थे। जिससे शासन के चार खम्भे थे : गाँव,जिला , राज्य और केंद्र सरकार। लोहिया अंग्रेजी शिक्षा के विरोध में थे और निजी विद्यालयों को समाप्त करना चाहते थे। लोहिया ने बहुत सारी पुस्तके लिखीं: जाति,व्यवस्था, बँटवारे के दोषी, गांधी और समाजवाद आदि।

(Source : http://en.wikipedia.org/wiki/File:Ram_Manohar_Lohia.jpg)

कांग्रेस समाजवादी दल (सीएसपी) की विचारधारा, रणनीति और कार्यक्रम

सीएसपी के नेतागण मार्क्सवादी विचारों से अत्यधिक प्रभावित थे। इनमें से ज्यादातर नेता योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था की मार्क्सवादी विचारधारा में विश्वास करते थे तथा सोवियत मॉडल की प्रशंसा करते थे। सन् 1936 के मेरठ सम्मेलन में सीएसपी ने यह घोषणा की -"सिर्फ मार्क्सवाद ही, साम्राज्यवादी विरोधी ताकतों का मार्गदर्शन कर सकता है। इसलिए पार्टी के सभी सदस्यों के लिए आवश्यक है कि वे वर्ग संघर्ष का सिद्धांत, क्रांति की तकनीक, राज्य की प्रकृति एवं समाजवादी समाज के बारे में जानकारी रखें" । सीएसपी ने चार बुनियादी उद्देश्य निश्चित किये : (1) ब्रिटिश शासन से पूर्ण स्वतंत्रता (2) भारतीय लोगों का स्वयं अपना संविधान बनाने का अधिकार(3) आजादी के बाद के युग में एक समाजवादी समाज की नींव (4) मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण से मुक्त समाज की स्थापना के लिए निजी सम्पत्ति की संस्था का उन्मूलन।

इस प्रकार कांग्रेस समाजवादी दल राष्ट्रवाद एवं समाजवाद की विचारधारा पर आधारित था। हालांकि कांग्रेस में रहकर कार्य करना उचित था परंतु कांग्रेस की नीतियों एवं कार्यक्रमों में सुधार का प्रयास भी करना आवश्यक था। वे कांग्रेस पार्टी को एक नयी क्रांतिकारी समाजवादी दिशा देना चाहते थे। जाने-माने इतिहासकार बिपिन चंद्रा का कहना है कि कांग्रेस पार्टी का यह पुनर्विन्यास, दो स्तरों पर लाने का प्रयास था - एक वैचारिक स्तर पर तथा दूसरे संगठन के स्तर पर। वैचारिक स्तर पर, सीएसपी के नेताओं ने क्रांग्रेस के सदस्यों को आर्थिक परिस्थिति का समाजवादी विश्लेषण से अवगत कराने का जिम्मा उठाया।ऐसा करके वे कांग्रेस के सदस्यों को मजदूरों एवं किसानों की समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाना चाहते थे। साथ ही साथ वे कांग्रेस सदस्यो के बीच समाजवादी आर्थिक विचारधारा का प्रचार-प्रसार भी करना चाहते थे। सीएसपी के नेता इस बात को समझ रहे थे कि कांग्रेस पार्टी को बदलने में समय लगेगा एवं उन्हें धैर्य से कार्य करने की आवश्यता है। और सीएसपी के नेताओं ने कभी ऐसा नहीं सोचा कि अगर कांग्रेस पार्टी उनकी नीतियों को नहीं मानती तो वे कांग्रेस पार्टी छोड़ देंगे। सन 1934 में जय प्रकाश नारायण ने कहा कि :

क्रांग्रेस समाजवादी दल

"हम कांग्रेस के सामने अपना प्रोग्राम रख रहे है, और हम चाहते हैं कि कांग्रेस इसे स्वीकार करे। अगर कांग्रेस इसे स्वीकार नहीं करती है, तो हम यह नहीं कहेंगे कि हम कांग्रेस छोड़ रहे हैं। अगर हम आज असफल होते हैं, तो फिर से प्रयास करेंगे।"

जयप्रकाश नारायण(जेपी) का जन्म 11 अक्तूबर 1902 को सिताब दियारा,बिहार में हुआ था।उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जयप्रकाश कैलिफॉर्निया एवं ओहीयो विश्वविद्यालय,अमेरिका गये। वहाँ वे मार्क्सवाद के प्रभाव में आए। भारत लौटने के बाद वे कांग्रेस पार्टी से जुड़ गए। परन्तु जल्द ही वे कांग्रेस की नीतियों एवं रणनीति से असंतुष्ट हो गए। इस पृष्टभूमि मे जयप्रकाश नारायण ने कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना में अग्रणी भूमिका निभाई। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, हजारीबाग जेल से निकल भागना एवं फिर भूमिगत आंदोलन का आयोजन ने जेपी को भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का एक महानायक बना दिया। जेपी युवाओं के प्रिय नेता बन गए। आजादी के कुछ ही वर्षों बाद सन 1954 में जेपी ने यह घोषणा की कि वे सक्रिय राजनीति में भाग नहीं लेंगे एवं अपना समय सर्वोदय एवं भूदान आंदोलन में लगाएँगे। परंतु जब 1974 में इंदिरा गांधी के दमन के विरुद्ध पूरा विपक्ष एक हो रहा था, तो जेपी उसके नेता बने एवं उन्होंने सम्पूर्ण क्रांति का नारा दिया। 8 अक्तूबर 1979 को पटना में जेपी का निधन हो गया। जेपी जीवन भर भारत के लिए समर्पित रहे। भले ही वे मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित थे परंतु मार्क्सवादियों के राष्ट्रीय संग्राम के प्रति विचारों से वे असंतुष्ट हुए। सीएसपी के एक नेता के रूप में जेपी ने भारत के किसान एवं मजदूरों की समस्या को उजागर करने का प्रयास किया। अपने जीवन के बाद के वर्षों में वे गांधीवादी विचारों के ज्यादा करीब आए एवं सर्वोदय एवं भूदान आंदोलन में भाग लिया। उन्होंने बाद में यह भी माना कि अगर व्यक्ति में बदलाव लाया जाए तो समाज में बदलाव भी हो जाएगा। इसलिए व्यक्तिक एवं सामाजिक बदलाव को अलग-अलग कर के नहीं देखा जा सकता। जेपी की प्रमुख कृतियाँ हैं - समाजवाद क्यों?, लाहौर के किले के अंदर , भारत का राष्ट्र निर्माण, समाजवाद से सर्वोदय की ओर, भारत की तीन मूल समस्याएँ इत्यादि।

क्रांग्रेस समाजवादी दल

कांग्रेस पार्टी में दूसरे स्तर का परिवर्तन नेतृत्व परिवर्तन के माध्यम से किया जाना था। सीएसपी की यह राय थी कि एक वैकल्पिक समाजवादी नेतृत्व को कांग्रेस की कमान सम्भालनी चाहिए।जय प्रकाश नारायण ने सीएसपी के बुनियादी राजनीतिक दर्शन को उजागर करते हुए 15 सूत्री कार्यक्रम को रेखांकित किया। कार्यक्रम के बिंदु इस प्रकार है :

(1) सभी आर्थिक एवं सामाजिक शक्तियों को उत्पादक वर्ग को हंस्तांतरित करना।

(2) देश का आर्थिक विकास राज्य के पूर्ण नियंत्रण में हो एवं योजनाबद्ध तरीके से हो ।

(3) महत्वपूर्ण उद्योगों का समाजीकरण हो।

(4) विदेशी व्यापार पर राज्य का एकाधिकार हो।

(5) उत्पादन, वितरण और सार्वजनिक ऋण प्रणाली में सहकारी समितियों की भूमिका।

(6) किसी भी मुआवजे के बिना, जमींदारी एवं सामंती व्यवस्था का उन्मूलन।

(7) भूमि को किसानों के बीच वितरित करना।

(8) सहकारी एवं सामूहिक खेती के लिए राज्य का समर्थन एवं सहयोग।

(9) किसानों और मजदूरों के बकाया ऋण को माफ करना।

(10)प्रत्येक व्यक्ति को काम का अधिकार।

(11) हर किसी को उसकी जरूरत के अनुसार एवं हर किसी से उसकी क्षमता के अनुसार - “यह मंत्र ही आर्थिक वस्तुओं के उत्पादन एवं वितरण का आधार होना चाहिए।

(12)कार्यात्मक आधार पर सार्वभौमिक मताधिकार को लागू करना।

(13)राज्य के द्वारा किसी धर्म को समर्थन नहीं एवं राज्य के द्वारा धर्मों के बीच कोई भेदभाव नहीं करना। राज्य द्वारा जाति या समुदाय पर आधारित किसी भेद को मान्यता नहीं देना।

(14)राज्य द्वारा लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होना।

(15)तथाकथित सार्वजनिक ऋण का उन्मूलन ।

सीएसपी का सामाजिक आधार बिहार, उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश के किसानों के बीच था। बिहार में सहजानन्द सरस्वती एवं आंध्र में एन जी रंगा जैसे सशक्त किसान नेताओं ने पहले ही किसानों को उनके अधिकारों के प्रति संवेदनशील बना दिया था। इन लोगोंके कार्यों ने समाजवादियो को अपनी विचारधारा का प्रसार करने के लिये एक उपजाऊ भूमि प्रदान की। सीएसपी की सदस्यता को सीमित रखने का प्रयास किया गया था। सिर्फ कांग्रेस पार्टी के वैसे सदस्य जो समाजवादी विचारधारा में विश्वास रखते हों, वही सीएसपी के सदस्य बन सकते थे। सीएसपी अपने रोजमर्रा के कार्यों के लिए कार्यसमिति का चुनाव करती थी। इस कार्यसमिति का गठन पार्टी के वार्षिक सम्मेलन के दौरान होता था। हालांकि नीति-निर्माण की परम शक्ति वार्षिक सम्मेलन के हाथों में थी, जिसमें सभी प्रांतीय इकाइयों की भागीदारी होती थी।

4. भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में कांग्रेस समाजवादी दल की भूमिका

सीएसपी के योगदान को दो तरह से समझा जा सकता है - एक पार्टी की भूमिका, दूसरे पार्टी के महत्वपूर्ण नेताओं की भूमिका। अपने दर्शन एवं रणनीति के अनुसार, सीएसपी ने कांग्रेस पार्टी एवं राष्ट्रीय आंदोलन दोनों में ही समाजवादी तत्व लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सीएसपी ने किसानों एवं मजदूरों की समस्याओं को पुरजोर तरीके से आगे रखा एवं इनके मुद्दों को राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ने का प्रयास किया। दूसरे, अगर हम सीएसपी के नेताओंकी भूमिका पर गौर करें तो यह देखते हैं कि वे भारत छोड़ों आंदोलन की रीढ़ की हड्डी थे। जेपी और लोहिया जैसे नेता न सिर्फ लोकप्रिय थे बल्कि जनता के बीच बहुत प्रभावशाली भी थे। इन नेताओं को नायक के रूप में देखा गया एवं इन्होंने आम जनता एवं कार्यकर्त्ताओं में उत्साह का संचार करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। यहां हम राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान सीएसपी की यात्रा के कुछ प्रकरणों की चर्चा कर सकते हैं। सीएसपी जल्द ही बिहार एवं यूपी में एक मजबूत ताकत बन कर उभरा। जिससे कांग्रेस में भी उसका पक्ष मजबूत होने लगा। कांग्रेस के अंदर इसका कार्य न सिर्फ समाजवाद की विचारधारा का प्रसार करना था वरण कांग्रेस के अंदर दक्षिणपंथी विचारों के प्रभाव को सीमित करना भी था। सीएसपी एवं दक्षिणपन्थी कांग्रेसी नेताओंके बीच परिषद में प्रवेश करने एवं कार्यालय स्वीकृति को लेकर मतभेद उभड़ा । सीएसपी के गठन के तत्काल बाद

ही भारत सरकार अधिनियम 1935 प्रस्तावित किया गया। सीएसपी के नेताओं का मानना था कि 1935 के अधिनियम में देश की जनता के लिए कुछ भी नहीं है।और इसलिए उन्होंने परिषद में प्रवेश एवं कार्यालय स्वीकृति का विरोध किया। हालांकि कांग्रेस में जब परिषद में प्रवेश पर आम सहमति बनी तो सीएसपी के नेताओं ने भी इसे स्वीकार कर लिया। परन्तु सीएसपी के नेताओं का लक्ष्य था कि परिषद के लिए होने वाले चुनवों में भाग लेना और फिर अंदर से सरकारी प्रणाली को खोखला बनाना। उन्होंने सोचा कि चुनावों में जीतने के बाद सरकार बनाने से इनकार कर देने से एक राजनीतिक गतिरोध पैदा हो जाएगा। सीएसपी, 1935 के अधिनियम को निष्क्रिय करना चाहता था। चुनावों में जीत के बाद, सरकार बनाने को लेकर कांग्रेस पार्टी के अंदर एक बहस शुरू हो गया। सीएसपी के नेता एवं नेहरू इसके पक्ष में नही थे।परंतु कांग्रेस के अंदर, बहुमत सरकार बनाने के पक्ष में था। हालांकि कांग्रेस द्वारा सरकार बना लेने के बाद भी सीएसपी के नेताओं ने किसानों के मुद्दों को लेकर कांग्रेस सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किए।

कांग्रेस समाजवादी दल से जुड़ा दूसरा प्रकरण कम्युनिस्ट पार्टी से इसके रिश्तों से सम्बंधित है। सन् 1934 में ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। इसलिए कम्युनिस्टों को एक ऐसे मंच की आवश्यकता थी, जहाँ से वे खुले तौर पर कार्य कर सके। समाजवादी एकता के नाम पर सीएसपी ने कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों का स्वागत किया। इस समाजवादी एकता के पीछे विचार यह था कि साम्राज्यवाद के विरोध में एक संयुक्त समाजवादी मंच तैयार किया जाए। तथा साथ ही साथ प्रभावी ढ़ंग से भारत में समाजवाद के सन्देश को प्रसारित किया जाए। हालांकि कांग्रेस समाजवादी दल में शामिल होने के पीछे कम्युनिस्टों के कुछ और ही इरादे थे। कम्युनिस्ट सदस्य, सीएसपी के मंच को सिर्फ अपने लाभ के लिए उपयोग करना चाहते थे। 1937-38 तक सीएसपी के महत्वपूर्ण पदों पर कम्युनिस्टों ने कब्जा कर लिया था। कांग्रेस समाजवादी दल के कुछ नेताओं (जैसे लोहिया) ने पहले ही इस समाजवादी एकता के विचार का विरोध किया था।और धीरे-धीरे जब कम्युनिस्टों की योजना उजागर होने लगी, तो यह साफ हो गया कि, समाजवादी एकता का विचार उचित नहीं था । कम्युनिस्टों का यह मानना था कि सीएसपी एक समाजवादी दल नहीं है, और सिर्फ कम्युनिस्ट ही असली समाजवादी हैं। कम्युनिस्ट केवल अपने आधार को व्यापक एवं मजबूत करने के लिए

सीएसपी के मंच का उपयोग कर रहे थे।इन सब बातों का पता चलने के बाद जल्द ही, 1940 के रामगढ़ सम्मेलन में कम्युनिस्टों को सीएसपी से निकाल दिया गया।

समाजवादी एकता का विचार अब समाप्त हो चुका था। अगर हम समाजवादी एकता की अवधि का विश्लेषण करते हैं तो पाते हैं कि कम्युनिस्ट वास्तविक लाभार्थी थे एवं सीएसपी एक पराजित पक्ष था। कम्युनिस्टों ने सीएसपी के मंच का उपयोग करते हुए सीएसपी में रहते हुए उन्होंने कांग्रेस एवं अन्य संगठनों में भी महत्वपूर्ण पदों को प्राप्त किया। कम्युनिस्टों ने सीएसपी के बहुत सारे क्षेत्रीय नेताओं को भी अपनी तरफ कर लिया।

सीएसपी के भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में भूमिका का सबसे महत्वपूर्ण प्रकरण, भारत छोड़ो आंदोलन में इसका योगदान है।बहुत सारे समाजवादी नेताओं ने इस आंदोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया :- जय प्रकाश नारायण, अरूणा आसफ अली, राममनोहर लोहिया, रामनंदन मिश्रा, बसावन सिंह, सूरज नारायण सिंह, योगेंद्र शुक्ल, अच्युत पटवर्धन , छोटू भाई पुरानिक इत्यादि। सीएसपी के नेताओं ने गांधी जी पर एक आंदोलन की शुरूआत करने के लिए दबाव बनाये रखा। और क्रिप्स मिशन की असफल्ता के बाद गांधी जी ने इस आंदोलन के लिए हामी भरी। 8 अगस्त 1942 को बम्बई में भारत छोड़ों आंदोलन की घोषणा की गई। गांधी जी ने कहा -"मैं आपलोगों को एक छोटा सा मंत्र देता हूँ, आप इसे अपने दिल में उतार लो और इसे अपने प्रत्येक स्वांस में महसूस करो। यह मंत्र है - करो या मरो। या तो हम लोग भारत को आजाद करायेंगे या फिर इस प्रयास में अपने प्राण त्याग देगे। हम अपनी दासता को देखने के लिए जीवित नहीं रहना चाहते"। लेकिन अंग्रेजी सरकार इस आंदोलन को बढ़ने नहीं देना चाहती थी। और इसलिए 9 अगस्त 1942 की सुबह को कांग्रेस के लगभग सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। ऐसे समय में एक नेता विहीन भटकते हुए आंदोलन को सीएसपी के नेताओं ने सम्भाला। जय प्रकाश नारायण हजारीबाग जेल से फरार होगए । डॉ. लोहिया गिरफ्तारी से बचने के लिए नेपाल चले गए थे, और फिर समाजवादी नेताओं ने मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन को तीव्र किया। समाजवादी नेताओ ने एक छापामार संगठन, आजाद दस्ता बनाया। इस दस्ते का उद्देश्य पूरे भारत में सरकारी प्रतिष्ठानों में तोड़फोड़ करना था। सम्पूर्ण भारत के विभिन्न क्षेत्रों में क्रांतिकारियों के बीच लगातार सम्पर्क बना रहता था। समाजवादी नेताओं ने पैसे, बम, डायनामाईट आदि एकत्रित करके देशभर के भूमिगत समूहों में बाँटने का भी कार्य

किया। पूना, बम्बई, सतारा, बड़ौदा, कर्नाटक, केरल, आन्ध्र बिहार एवं दिल्ली के भागों में ये स्थानीय भूमिगत संगठन अत्यंत सक्रिय थे। हालांकि इन संगठनों में बहुत ज्यादा लोग सीधे रूप से शामिल नहीं थे। परंतु उन्हें व्यापक स्तर पर लोगों का समर्थन प्राप्त था। इन भूमिगत आंदोलनों ने ब्रिटिश सरकार की संचार लाइनों को नष्ट करनेकी कोशिश की। कई सरकारी प्रतिष्ठानों एवं कार्यालयों पर हमला किया गया। एक बहुत रोमांचकारी कदम के रूप में, मुम्बई में एक रेडियो प्रसारण की शुरुआत की गई। यह रेडियो भूमिगत कार्य करता था, एवं आंदोलन के बारे में खबरों को प्रसारित कर लोगों का मनोबल बढ़ाने का कार्य करता था। प्रसिद्ध सीएसपी नेता उषा मेहता एवं राम मनोहर लोहिया नियमित रूप से उस रेडियो पर प्रसारण करते थे। नवम्बर 1942 में जब पुलिस द्वारा जब्त करने तक यह प्रसारण पूरी जोश से चलता रहा। आंदोलन की समाप्ति के बाद सीएसपी के नेता असली हीरो के रूप में उभरे। जेल से निकलने के बाद लोहिया और जेपी का भिन्न शहरों में गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

5. सीएसपी एवं कांग्रेस पार्टी

सीएसपी ने राष्ट्रीय आंदोलन में कांग्रेस को अग्रणी जन पार्टी के रूप में महत्वपूर्ण माना । परंतु वे कांग्रेस के नेतृत्व कार्यक्रमों एवं रणनीति से संतुष्ट नहीं थे। कभी-कभी उन्होंने कांग्रेस नेतृत्व को पूँजीपति वर्ग के हितों के प्रतिनिधि के रूप में भी देखा। उनका मानना था कि कांग्रेस पार्टी में बहुत सारे प्रगतिशील लोग हैं, परंतु इसका नेतृत्व आमतौर पर दक्षिणपंथी समूह के पास ही रहता है। इसलिए सीएसपी का यह उद्देश्य था कि वह कांग्रेस के अंदर वामपन्थी तत्वोंको मजबूत करे तथा दक्षिणपन्थी तत्वों को नेतृत्व से हटाये।साथ ही साथ वे कांग्रेस पार्टी को अधिक प्रतिनिधिक भी बनाना चाहते थे। इसलिए वे कांग्रेस पार्टी में नेतृत्व परिवर्तन एवं संगठनात्मक परिवर्तन चाहते थे। सीएसपी के कई नेता नेहरू को कांग्रेस में अपने दोस्त एवं गाइड के रूप में देखते थे। नेहरू ने सीएसपी के बनने पर उन्हें शुभकामनाएँ भी भेजी थीं।जब 1936 में नेहरू कांग्रेस के अध्यक्ष बने तो सीएसपी के नेताओं ने इसे कांग्रेस के अंदर वामपंथियों के जीत के रूप में देखा। नेहरू ने जेपी, नरेंद्र देव एवं अच्युत पटवर्धन को कांग्रेस कर्यकारिणी समिति का सदस्य भी नियुक्त किया। हालांकि कांग्रेस के अंदर एक मजबूत दक्षिणपंथी धरा था जो नेहरू के समाजवादी झुकाव का विरोध करता था। राजेंद्र प्रसाद, सरदार पटेल एवं राजगोपालाचारी जैसे नेता नेहरू के समाजवादी झुकाव के पक्ष में नहीं थे। इन नेताओं के दबाव के कारण नेहरू ने

एक मध्य मार्ग अपनाया एवं यह कहा कि अभी समाजवाद सैद्धांतिक स्तर पर ही है, और जब तक हम स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर लेते, इसे लागू करने की बात सम्भव नहीं है।

सीएसपी का कांग्रेस के साथ सम्बंध को समझने के लिए, आवश्यक है कि गांधी जी के साथ उनके सम्बंधों पर विचार किया जाए।जब 1934 में कांग्रेस समाजवादी दल का गठन किया गया तो गांधी जी इसके विरोध में थे। यहाँ तक कि गांधी जी ने सितम्बर 1934 मे अपने कांग्रेस छोड़ने के कारणों में सीएसपी को भी एक कारण बताया। दूसरी ओर समाजवादी भी गांधी जी के कार्यशैली की आलोचना करते थे। परंतु दोनों पक्ष ही एक-दूसरे की बहुत इज्जत करते थे। युवा समाजवादी नेतागण संघर्ष करने के लिए अधीर थे और वे किसी भी बिंदु पर आंदोलन को अर्ध विराम देने के पक्ष में नहीं थे। इसलिए गांधी जी के रचनात्मक कार्यों में उनका कोई विश्वास नहीं था।

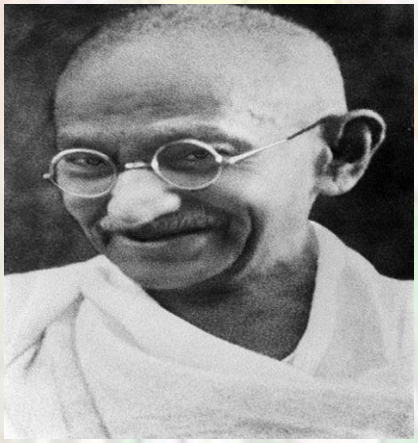

ट्रस्टीशिप (न्यास) एक सामाजिक आर्थिक दर्शन है, जो गांधी जी द्वारा दिया गया था। इस दर्शन के द्वारा वे समाज में धन के संचय-आयोजन एवं उपयोग की प्रक्रिया में बदलाव लाना चाहते थे । और यह बदलाव व्यक्ति के हृदय परिवर्तन से होना था। गांधी जी के शब्दों में –"मान लो कि मेरे पास बहुत धन है या तो पुश्तैनी है या मैने कमाया है - मुझे पता होना चाहिए कि सारी सम्पत्ति मेरी नहीं है, मेरा अधिकार सिर्फ सही एवं सम्मानजनक आजीविका का है, जैसे कि लाखों अन्य लोगों का है। मेरा बाकी धन समुदाय का है और वह समुदाय के कल्याण के लिए उपयोग किया जाना चाहिए" । गांधी जी का कहना था कि एक पूँजीपति को अपने लालच को छोड़ अपनी आजीविका साधारण व्यक्ति की तरह हासिल करनी चाहिए।ऐसे में पूँजीपति सिर्फ धन का रखवाला होता है और उस धन का मालिक समुदाय होता है। गांधी जी मार्क्सवादियों के क्रांति के विचार एवं सभी सम्पत्ति का राज्य के पास होने के विचार के विरोध में थे। गांधी जी के लिए ट्रस्टीशिप मानव को मानव के पास लाने का एक उपागम था।

(Source of Picture :http://en.wikipedia.org/wiki/File:Portrait_Gandhi.jpg)

कांग्रेस समाजवादियों के अनुसार रचनात्मक कार्य को क्रांति के विकल्प के रूप में प्रस्तुत करना ठीक नहीं है। और साथ ही रचनात्मक कार्यक्रम राष्ट्रीय आंदोलन को जन आंदोलन बनाने का तरीका नहीं हो सकता। कांग्रेस समाजवादियों ने गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम को अकर्मण्यता को छुपाने का वादा एवं एक बेवकूफी भरा कदम बताया। उनका यह भी कहना था कि रचनात्मक कार्य स्वतंत्रता संघर्ष के महत्वपूर्ण मुद्दे से ध्यान हटाकर कम महत्वपूर्ण गतिविधियों में लगाना चाहता है। दिलचस्प बात यह है कि बाद में चल कर जेपी ने यह माना कि गांधी जी के रचनात्मक कार्यों का विरोध करना ठीक नही था। जेपी ने कहा कि रचनात्मक कार्यक्रम और जन सम्पर्क ग्रामीण भारत को समझने में फायदेमंद होता। कांग्रेस समाजवादी दल के नेताओं की आर्थिक मुद्दों पर गांधी जी के साथ मौलिक असहमति थी। समाजवादी भारतीय आर्थिक व्यवस्था में संरचनात्मक बदलाव लाना चाहते थे। दूसरी तरफ गांधी जी ने धन का कुछ हाथों में संचित होना एवं गरीबी को, समस्या के रूप में तो देखा परंतु इसके समाधान के रूप में उन्होंने जो हल सुझाया, वह था; ट्रस्टीशिप (न्यास) । कांग्रेस समाजवादियों ने गांधी जी के न्यास के सिद्धांत की कटु आलोचना की। गांधी जी के आर्थिक विचारों के बारे में जेपी का कहना था कि यह आर्थिक

विश्लेषण का एक दलद्ल है जो अच्छे इरादों एवं अप्रभावी नैतिक शिक्षा का मिश्रण है। समाजवादियों के अनुसार गांधी जी के न्यास के विचार के कारण उच्च वर्गों को अपना वर्चस्व कायम रखने में सहायता मिलेगी। समाजवादी गांधी जी के रामराज्य के विचार का भी विरोध करते थे। उनका मानना था कि गांधी जी का हृदय परिवर्तन सम्बंधी विचार व्यर्थ है, और सामाजिक संरचना ही मनुष्य के व्यवहार को निश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है।साथ ही साथ राम-राज्य और न्यास जैसे विचार वर्तमान असमानता एवं दमन को छुपाकर समाज का गलत रूप प्रस्तुत करते हैं।

6. उपसंहार

कांग्रेस समाजवादी दल ने भारतीय परिस्थिति का एक वैकल्पिक विश्लेषण प्रस्तुत किया एवं स्वतंत्र भारत के लिए एक समाजवादी सपने को बुना।एक तरफ तो कांग्रेस के विकल्प के रूप में कम्युनिस्ट थे, जो कांग्रेस से बिल्कुल अलग थे। दूसरी ओर कांग्रेस समाजवादियों ने कांग्रेस को नहीं छोड़ा और ऐसा माना की राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम सर्वोपरि है। सीएसपी का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बहुत सारे योगदान है। भारत छोड़ो आंदोलन में सीएसपी की भूमिका उनके इतिहास के स्वर्णिम क्षण थे। लेकिन साथ ही साथ सीएसपी की कुछ समस्याएँ भी थीं। प्रथम, मुख्य रूप से, विचारधारा के स्तर पर सीएसपी बहुत साफ नहीं था। सीएसपी परस्पर विरोधी विचारधाराओं का एक मिश्रण था। दूसरे,हालांकि सीएसपी समाजवाद की बात करता था परंतु वे भारत में समाजवाद को प्रचारित करने एवं अपने लिए जगह बनाने में, कम्युनिस्टों से पिछड़ गए। सीएसपी द्वारा कैबिनेट मिशन प्लान को नकारना एवं संवैधानिक सभा में भाग न लेने के निर्णय ने सीएसपी की भूमिका को और संकुचित कर दिया।स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सीएसपी ने अपने आप से कांग्रेस शब्द हटा दिया और वे समाजवादी दल बन गए। आजादी के बाद जेपी ने एक तरह से सक्रिय राजनीति से अपने आप को अलग कर लिया। परंतु लोहिया ने समाजवादी विचारधारा की मशाल को जलाए रखा एवं कांग्रेस को चुनौती देते रहे।

Reference :

Ashok Acharya, Rajeev Bhargava (2008) Political Theory: An Introduction, DORLING KINDERSLEY, New Delhi.

Bandyopadhyay, Sekhar (2004) From Plassey to Partition: A History of Modern India, Orient Longman, Hyderabad.

Chandra,Bipin (1989) India's Struggle for Independence, 1857-1947, Penguin Global, New Delhi.

Heywood,A (2012) Political Ideologies: An Introduction, Palgrave Macmillan,new Delhi.

Mehrotra, N.C (1995), The Socialist Movement in India, Radiant Publishers, New Delhi.

Pradhan, Ram Chnadra (2012) Raj to Swaraj - Textbook On Colonialism & Nationalism In India, Macmillan India Limited, New Delhi.

Raul,Arnav, What is socialism and what are its essential characteristics ?, http://www.publishyourarticles.net/knowledge-hub/history/what-is-socialism-and-what-are-its-essential-characteristics.html.

Sarkar, Sumit (1983) Modern India: 1885-1947, Macmillan India, Madras.